Introduction

भूमिका

कविता मानव चेतना की अर्थपूर्ण, भावात्मक अभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम रूप है। उसे मनुष्य मात्र की मातृभाषा कहा गया है। मानव जीवन के समग्र पहलुओं तक उसकी व्याप्ति है। इसलिए मानव जीवन की अन्तरतम गहराइयों में होने वाले परिवर्तनों की छाया साहित्य में सबसे पहले कविता पर ही पड़ती है। युग–मानस के सूक्ष्मतम आवर्तनों–विवर्तनों का परिचय, शब्दों, अर्थों भावों और विचारों के नये सन्तुलन से मिलता है। कविता ऐसे प्रत्येक सन्तुलन के साथ नयी होती रही है। नयी कविता मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को वाणी देती रही है। मानव व्यक्तित्व को इतना अधिक महत्व किसी युग में नहीं मिला, जितना नयी कविता युग में। मानवता के सामूहिक निर्माण और विनाश का प्रश्न भी सर्वाधिक उग्र होकर इसी युग में सामने आया।

कविता सिर्फ राजनीतिक और सामाजिक घटनाओं का अनवरत अनुवाद भर नहीं है। विविध राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक घटनाएँ मानव–व्यक्ति के मन पर जो घनीभूत प्रभाव डालती हैं, कविता उसकी भावात्मक प्रतिक्रिया है। 'नयी कविता' का बीज प्रयोगवाद में निहित है। सन् 1951 के बाद से नयी कविता का प्रारम्भ माना जा सकता है। नयी कविता रागयुक्त, रसनीय और आस्थावादी है। यह जीवन की कविता है जीवन्त कविता है। इसमें मानव–जीवन की सरस–विरस, राग–विराग, आसक्ति अनासक्ति, हर्ष–विषाद, आस्था–अनास्था और यथार्थमयी दृष्टि है। ग्राम्य जीवन की सुनहरी झाँकियाँ, सर्वसाधारण के अंधविश्वास, मनौतियाँ, जादू–टोना, लोकोत्सव लोक–व्यवहार, तीर्थ–व्रत सांस्कृतिक वातावरण तथा सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों का जीवंत चित्रण नयी कविता में हुआ है।

किसी देश की संस्कृति का वास्तविक स्वरूप हमें वहाँ के लोक–जीवन या ग्राम्य परिवेश में देखने को मिलता है। ग्राम्य–जीवन में प्रचलित रुढ़ियों तथा

रीति–रिवाजों को अन्धविश्वास कहकर उपेक्षित कर देना उचित नहीं है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि रूढ़ियों पर संस्कृति के विशाल प्रासाद का ढाँचा खड़ा है। विविध पर्वों और उत्सवों पर विशेष आचारों का पालन आज भले ही कुछ लोगों की दृष्टि में रूढ़ि मात्र हो किन्तु यह भी सत्य है कि वह अतीत की किसी गौरवमयी वास्तविकता की ओर संकेत अवश्य करता है। ग्राम्य–जीवन की इन लोक–लुभावन छवियों को नयी कविता में पग–पग पर देखा जा सकता है। अपने विकास क्रम में मानव संस्कृति आज जिस पड़ाव पर पहुँची है वहाँ अतिभौतिकता, अतिबौद्धिकता और अतियान्त्रिकता उसकी ज्वलन्त समस्याएँ हैं। इड़ा के साथ मिलकर मनु ने 'विज्ञान सहज साधन उपाय' स्वीकार करते हुए इस भू लोक पर जो उद्योग प्रधान सभ्यता बनाई है वहाँ का जीवनक्रम इन्हें जन्म देता है। इन समस्याओं से उत्पन्न संघर्ष को शमित करने के लिए समरसता की भावभूमि से सम्पन्न, ग्राम्य–चेतना युक्त नयी कविता काव्यान्दोलन अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

नयी कविता समाज की सजीव एवं सजग इकाई के रूप में व्यक्ति को प्रधानता देती है। व्यक्ति के माध्यम से ही वह लोक मंगल तक पहुँचना चाहती है। ऐसी व्यवस्था को, जिसमें व्यक्ति अपनी सार्थकता और सजगता खो दे, वह समाज के लिए कल्याणकारी नहीं समझती, अहम का खोखलापन उसका अभीष्ट नहीं है। युग के सन्दर्भ में वह एक निश्चित उत्तरदायित्व के साथ सार्थक संवेदनीयता से व्यक्ति–व्यक्ति की रिक्तता को भर देना चाहती है। नयी कविता की आत्ममंथनमयी व्यक्तिचेतना का स्वाभाविक पर्यवसान व्यापक सामाजिक सत्य के प्रति आत्मदान में होता है। औसत जीवन के औसत अनुभव और अन्ततः समग्र जीवन का चित्रण करने के लिए कृतसंकल्प होने के कारण नयी कविता में लोकोन्मुखता की प्रवृत्ति बढ़ती गयी और वह जन–जीवन के अधिक निकट आती गयी। उसमें लोक जीवन की शब्दावली, पौराणिक प्रतीक, धरती की गन्ध से सुवाषित उत्प्रेक्षाएँ, प्राकृतिक परिवेश से सम्पृक्त बिम्ब, लोकोत्सव, लोक

विश्वास, व्रत–उपवास, मनौतियाँ, यथार्थ के धरातल से जुड़ी कल्पनाएँ और मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी रचनादृष्टि का समावेश होता चला गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में नयी कविता के प्रभावशाली एवं प्रतिनिधि कवि तथा उनकी कृतियों को केन्द्र में रखकर 'नयी कविता में ग्राम्य–बोध : एक अनुशीलन' के परिप्रेक्ष्य में नवीन दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है। नयी कविता के कवियों ने महानगरीय जीवन के साथ–साथ ग्राम्य–जीवन वहाँ की सांस्कृतिक विशिष्टताओं तथा सुन्दर प्राकृतिक परिवेश का बहुआयामी तथा समग्र चित्र प्रस्तुत किया है।

इस शोध प्रबन्ध का ***प्रथम अध्याय*** "नयी कविता की भूमिका और विकास के विविध पंथ" है। इसके अन्तर्गत नयी कविता की पृष्ठभूमि, नयी कविता का स्वरूप तथा उद्‌भव एवं विकास और नयी कविता के विविध नये पक्ष में विविध काव्यान्दोलनों पर गहराई के साथ विचार किया गया है। एक नयी शोध–दृष्टि देने के साथ–साथ विभिन्न समीक्षकों, आलोचकों, कवियों के मत भी यथा सम्भव दिए गये हैं। वैश्विक परिदृश्य में घट रही घटनाओं का नयी कविता पर पड़ने वाला प्रभाव भी विश्लेषित किया गया है।

शोध–प्रबन्ध का ***द्वितीय अध्याय*** "हिन्दी कविता में ग्राम्य–बोध का स्वरूप और विकास" है। जिसमें सम्पूर्ण हिन्दी काव्य में ग्राम्य–बोध की व्याप्ति को रेखांकित किया गया है। आदि कालीन हिन्दी काव्य से लेकर नयी कविता युग तक के प्रतिनिधि कवि एवं उनकी प्रमुख रचनाओं को केन्द्र में रखकर ग्राम्य–संस्कृति वहाँ की वैविध्यमय प्रकृति तथा लोक जीवन की छवियों का आकलन किया गया है।

आदिकाल का प्रेमाख्यानक काव्य मुख्यतः लोकोन्मुखी है। भक्तिकाव्य भी मुख्य रूप से लोकभाषा में रचा गया लोकोन्मुख काव्य है। रीतिकालीन कविता राजाओं, सामन्तों और राजप्रासादों में पुष्पित–पल्लवित होती रही उसमें ग्रामीण परिवेश एवं सामान्य जन–जीवन को अपेक्षाकृत कम महत्व मिल पाया हैं आधुनिक कालीन हिन्दी कविता के अन्तर्गत सम्मिलित भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग,

छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी कविता में बढ़ते हुए औद्योगीकरण तथा शहरीकरण और बदलते जीवन मूल्यों के बावजूद ग्राम्य–बोध की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। ग्रामीण जनजीवन तथा वैविध्यमय प्राकृतिक परिवेश का चित्रण आधुनिक काव्य में पूरी जीवंतता के साथ हुआ है।

तृतीय अध्याय में "नयी कविता में ग्राम्य–बोध का स्वरूप एवं उसके विविध आयाम" विषय पर नवीन दृष्टिकोण से अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जिसमें लोकजीवन एवं लोक संवेदना को स्पष्ट करने के साथ–साथ नयी कविता में ग्राम्यबोध एवं ग्राम्य संस्कृति की व्याप्ति को रेखांकित किया गया है। नयी कविता में ग्राम्य बोध के विविध आयामों पर भी प्रकाश डाला गया है, जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पहलुओं को विस्तार से विश्लेषित किया गया है। लोक–जीवन का सम्बन्ध पोथियों के ज्ञान से परे नगरों और गाँवों में फैली समूची जनता है। नयी कविता का सामाजिक पक्ष बड़ा प्रबल है, उसमें जीवन का यथार्थ भी प्रतिबिम्बित है और सामाजिक निर्माण का भाव भी। उसमें गहरी लोक–संपृक्ति की भावना भी पाई जाती है। नयी कविता के कवियों ने प्रत्येक क्षण को पकड़ा है और अपनी नितान्त वैयक्तिकता में भी वे अपने अस्तित्व के प्रति सतर्क व आस्थावान दिखायी देते हैं।

चतुर्थ अध्याय में "नयी कविता में ग्राम्य–बोध की प्रस्तुति तथा भाषा की कलात्मक अभिव्यक्ति" पर विचार किया गया है। जिसमें प्रतीक, बिम्ब, भाषा–शैली, मुहावरे कहावतें, लोकोक्तियाँ शामिल हैं। नयी कविता मुक्त छंद के साँचे में ढालकर नवीन युग–पट को सामने ला रही है तथा नये बिम्बों और प्रतीकों के प्रयोग से भाषा को जनभाषा के निकट रखते हुए ग्राम्य–परिवेश एवं वहाँ के जनजीवन को पूरी जीवंतता के साथ अभिव्यक्त कर रही है जनमानस के साथ लोकोक्तियों का सम्बन्ध तो अपरिज्ञात प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। मानवीय विकास की महत्वपूर्ण सूचनाओं के रूप में लोकोक्तियों का अत्यधिक महत्व है। अनुभूतियों की सटीक अभिव्यक्ति ही इनकी सार्थकता है। नयी कविता में प्रचुर मात्रा में लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। विविध प्रकार की

बिम्बात्मक कविताओं का सृजन भी नयी कविता युग में हुआ है। प्रतीकों की दृष्टि से पौराणिक प्रतीक नयी कविता की अपनी विशेषता हैं। नयी कविता के पौराणिक प्रतीकों में वर्तमान मूल्य–संकट और व्यापक मानवीय धरातल पर उसकी प्रतिक्रिया की स्वीकृति हमें देखने को मिलती है।

इस शोध प्रबन्ध का ***पंचम अध्याय*** "नयी कविता के प्रमुख कवि तथा उनका ग्राम्य वर्णन" है। इस अध्याय में नयी कविता के प्रमुख कवियों एवं उनकी प्रतिनिधि रचनाओं में ग्राम्य–बोध की स्थितियों का आकलन किया गया है। इस अध्याय में शामिल किये गये प्रमुख नये कवि–अज्ञेय, मुक्तिबोध, जगदीश गुप्त, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, भवानी प्रसाद मिश्र शमशेर बहादुर सिंह, रघुवीर सहाय, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, कुँवरनारायण, भारतभूषण अग्रवाल हैं। इन कवियों की कविताओं में ग्राम्य–जीवन एवं वहाँ की विविधवर्णी प्रकृति का प्रचुर मात्रा में एवं जीवंत चित्रण मिलता है।

उपसंहार के अन्तर्गत प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के साथ–साथ ग्राम्य–बोध के परिप्रेक्ष्य में नयी कविता की उपलब्धियों एवं सृजनात्मक सम्भावनाओं पर विचार किया गया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध परम श्रद्धेय डॉ० डॉ० ओम प्रकाश यादव हिन्दी विभाग महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के स्नेहिल एवं विद्वतापूर्ण निर्देशन, प्रोत्साहन तथा शुभाशीर्वाद का ही परिणाम है। उनकी प्रेरणा एवं अथक परिश्रम के कारण ही यह शोध कार्य परिपूर्ण हो सका है। मैं उनके सहज स्नेह और ममता के समक्ष सदैव नत–मस्तक एवं कृपाओं के प्रति चिर–ऋणी रहना ही उत्तम समझता हूँ। आपने अपने व्यस्ततापूर्ण समय में से सदैव मेरी विषम परिस्थितियों में मेरी सुविधानुसार समय देकर मेरा मार्गदर्शन किया है। औपचारिकता के नाम पर उनका आभार प्रदर्शित कर मैं उनके गुरु–ऋण से मुक्त नहीं होना चाहता, उनके द्वारा ही ज्ञान राशि को इस रूप में प्राप्त करके किन भावों से उनके प्रति कृतज्ञता को व्यक्त करूँ, यह मेरे लिए एक कठिन प्रश्न है।

यह मेरे लिए गौरवपूर्ण एवं असीम प्रसन्नता की बात है कि मैं अपने विभागाध्यक्ष श्रद्धेय डॉ० विष्णु विराट चतुर्वेदी जी तथा महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा के हिन्दी विभाग के अध्यापक व अध्यापिकाओं के प्रति आभार प्रदर्शित करूँ जिन्होंने समय–समय पर शोध–कार्य के लिए प्रोत्साहित किया एवं इसकी सम्पूर्णता के लिए आशीर्वचन प्रदान किया,। महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के श्रीमती हंसा मेहता लाइब्रेरी के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने लाइब्रेरी के सहज एवं निर्वाध प्रयोग की अनुमति प्रदान की।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के स्मृति शेष विभागाध्यक्ष प्रख्यात आलोचक प्रो० सत्यप्रकाश मिश्र एवं हिन्दुस्तानी एकेडमी के स्मृति शेष अध्यक्ष लोकप्रिय कवि डॉ० कैलाश गौतम के योगदान को मैं भुला नहीं सकता जिन्होंने अपना विद्वत मार्गदर्शन प्रदान कर शोध जैसे दुष्कर कार्य को सहज बनाया। जिनका असामयिक अवसान साहित्य प्रेमियों के हृदय में गहरी टीस और सम्पूर्ण साहित्य जगत में कभी न भर सकने वाली रिक्तता छोड़ गया। हिन्दी विभाग के प्रो० राजेन्द्र कुमार एवं डॉ० मुश्ताक अली का मैं कृतज्ञ हूँ जिनके स्नेहिल एवं उदार व्यक्तित्व ने सदैव प्रेरित किया है। मैं आभारी हूँ उ०प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के कुलपति प्रो० केदारनाथ सिंह यादव जी का जिन्होंने अपने व्यस्ततापूर्ण कार्यक्रमों में से समय निकालकर मुझे मार्गदर्शन एवं आशीर्वचन प्रदान किया।

उन सभी भारतीय एवं पाश्चात्य लेखकों, विद्वानों तथा नयी कविता में ग्राम्य–बोध विषयक दृष्टि सम्बन्धी शोध प्रबन्ध के लेखकों के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ जिन ग्रन्थों से मुझे सदैव ही सम्बल प्रेरणा एवं सहायता मिली। मैं उन समस्त पुस्तकालयों विशेष रूप से इलाहाबाद विश्वविद्यालय की सेन्ट्रल लाइब्रेरी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडमी एवं राजकीय पब्लिक लाइब्रेरी के अध्यक्षों तथा समस्त

कर्मियों का विशेष आभारी हूँ जिनके सौजन्यपूर्ण सहयोग से मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका।

बिना पारिवारिक सहयोग के कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता, इस पुनीत कार्य के पूर्ण होने के अवसर पर पूज्यनीय चाचाजी श्री रणजीत यादव, श्री केवल प्रसाद यादव, श्री शीतला प्रसाद यादव एवं आदरणीय बड़े भाइयों श्री ओम प्रकाश यादव, श्री शिव प्रकाश यादव तथा भाभियों श्रीमती शुकन्तला यादव, श्रीमती पार्वती यादव एवं बड़ी बहनों श्रीमती शान्ता यादव एवं श्रीमती मालती यादव को सादर नमन करता हूँ। साथ ही अनुज दिनेश व अभिषेक तथा भतीजों अमित, आलोक, अभिनव को शुभ आशीर्वाद प्रेषित करता हूँ। जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं आशीर्वाद से यह शोध–कार्य पूर्ण हो सका।

शोधकार्य के सहयोगी साथियों एवं सहृदय सहपाठियों सर्वश्री डॉ० राम अवध यादव, डॉ० राकेश द्विवेदी (प्रवक्ता, डी०ए०वी० डिग्री कालेज, वाराणसी), शिव कुमार सोनी, अशोक कुमार, रामसुन्दर यादव, अजय मौर्या, डॉ० कृष्ण प्रताप सिंह, डॉ० रणबहादुर, डॉ० सचिन जोशी, डॉ० लक्षिमन (प्रवक्ता, कोलोनिया विश्वविद्यालय, श्रीलंका) को धन्यवाद ज्ञापित करने के बजाय इनकी सफलता एवं सहयोग की कामना करता हूँ। मैं गोपेश कम्प्यूटर प्वाइण्ट, कटरा, इलाहाबाद के गोपेश जी का आभारी हूँ जिन्होंने पूरे मनोयोग से इस शोध प्रबन्ध का टंकण कार्य पूर्ण किया।

अंत में मैं कृतज्ञ हूँ साहित्य प्रेमी कविमना अपने परमपूज्य पिताजी श्री गंगा प्रसाद एवं माता जी श्रीमती रमादेवी का जिन्होंने मुझ अल्पज्ञ को सदैव स्नेह, प्रोत्साहन एवं शुभाशीर्वाद प्रदान किया। उनकी प्रेरणाओं एवं आशीर्वचनों ने सदैव मुझे सम्बल प्रदान किया है। उसी दृष्टि प्रसाद के साथ–

श्रावण शुक्ल पक्ष *(आनन्द प्रकाश)*